॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य-प्रेरणा

(आर्यसमाज राजेन्द्र नगर का मासिक पत्र)

वर्ष-3, अंक-3, मास नवम्बर 2023 विक्रमी संवत् 2080 दयानन्दाब्द 200 सृष्टि संवत् 1,96,08,53,123

कुल पृष्ठ 8 एक प्रति 5 रूपये वार्षिक शुल्क 50/- रूपये आजीवन 500/- रूपये

सम्पादक : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री www.aryasamajrajandernagar.org दूरभाष:- 011-40224701

विज्ञान व कलाप्रेमी महर्षि दयानन्द सरस्वती

❑ डॉ. विनय विद्यालंकार

जिस युग में भारतवर्ष केवल राजनैतिक रूप से पराधीन था अपितु सांस्कृतिक, धार्मिक व मैं दार्शनिक रूप से भी अपनी मूल विचारधारा को विस्तृत कर परिचय की ओर देखने लगा था। अपनी व संस्कृति, सभ्यता पर गर्व करने की बजाय हीन भावना से ग्रस्त हो गया था। यहाँ के समाज सुधारक पाश्चात्यों को ही सभ्य समाज का जनक मानने लगे थे। यहाँ तक कहा जाने लगा था कि हमारे पास कहने करने को कुछ है ही नहीं। हम जातिवादी हैं, नारी शिक्षा विरोधी है, छुआछात वादी हैं। 'स्त्री शूद्रौ नाधीयताम्' जैसी उक्तियाँ जोर-शोर से प्रसारित की जा रही थीं, 'नारीनरकस्य द्वारम्' जैसी उक्तियाँ भारतीय विचारकों को यह सोचने पर विवश कर रही थीं कि क्या हमारे धर्म में नारी सम्मान को कोई स्थान है? दूसरी ओर अनेक पाश्चात्य देशों भी धर्म शब्द से ही घृणा का वातावरण बन गया था, क्योंकि वहाँ धर्म के ठेकेदारों ने विज्ञान की तथ्यात्मक दृष्टि रखने वालों को मृत्युदण्ड तक दे दिया था।

जहाँ एक ओर भारत धर्म के विकृत रूप से ग्रस्त था तो पाश्चात्य देश विज्ञान के अभिमान में धर्म की अपेक्षा को ही बुद्धिवाद मानने लगे थे। ऐसे वातावरण में एक ऐसा आर्य प्रचारक वैज्ञानिक इस भटकी हुई मानव जाति को प्राप्त हुआ जिसने धर्म को मानवता का आधार माना तथा विज्ञान को मानवता का संवाहक बताया, जिसने समस्त प्राणियों को रक्षा का कर्तव्य बताया और समस्त मानकों को ही एक जाति बताया। दर्शन का सूत्र देकर कहा 'समानपुसनात्मिकी जाति' अभी जिनका जन्म एक ही प्रक्रिया से होता है वे एक जाति कहलाती हैं। इस आधार पर समस्त मानव जाति परस्पर भाई-बहिन हैं। वह महापुरुष कोई और नहीं युगप्रवर्तक, वेदोद्धारक महान् समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती थे। जिन महर्षि ने न केवल भारत में अपितु विश्वभर के बुद्धिजीवी विचारकों में कुतूहल उत्पन्न कर दिया था। क्या ऐसा भी हो सकता है कि जो भगवा वस्त्र धारण करता है, विश्व के प्राचीन ग्रन्थ वेदों की बात कहता हो, धर्म प्रचारक हो, प्राचीन कर्मकाण्ड का पोषक हो, धार्मिक ग्रंथों का मानने वाला हो, वेदों के साथ ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक ग्रंथ, उपनिषद्, स्मृति शास्त्र, षड्दर्शन, चरक संहिता, सुश्रुत संहिता व रामायण-महाभारत जैसे संस्कृत ग्रंथों में जिसकी आस्था हो और वह विशुद्ध वैज्ञानिक-तार्किक बातें करता हो। ऐसे कैसे हो सकता है? क्योंकि धर्म प्रचार का अभिप्राय पाखण्ड, कुरीति, जातियाँ, छुआछूतवाद, अतार्किक, अवैज्ञानिक बातें करने वाले माना जा रहा था। ऐसे में महर्षि दयानन्द अद्वितीय धर्म प्रचारक थे जो प्रत्येक सिद्धान्त को विज्ञान व तर्क की कसौटी पर तौलते थे। उनका मानना था धर्म और विज्ञान एक दूसरे के विरोधी नहीं अपितु पूरक हैं। विज्ञान कैसे का उत्तर खोजता है जगत् कैसे बना? गृह-नक्षत्र कैसी गति कर रहे हैं? मानव शरीर संरचना कैसे हुई है, मन कैसे कार्य करता है ? बुद्धि क्या है? व कैसे कार्य करती है? आदि के धर्म व दर्शन क्यों का उत्तर देता है। जगत् क्यों बना? मानव जीवन किसलिए है? मन का कार्य क्या है ? बुद्धि क्यों सर्वोपरि है? महर्षि का चिन्तन कहता है धर्म के बिना विज्ञान अन्धा होता है, तथा विज्ञान के बिना धर्म लँगड़ा होता है, धर्म दृष्टि है तो विज्ञान दृश्य है। मनुष्य जीवन का उद्देश्य पलायन नहीं अपितु जगत् में सुखपूर्वक जीना, प्रेमपूर्वक जीना, परस्पर सुख-दु:ख में भागीदार बनना, एक दूसरे का सहयोग करते हुए कल्याण मार्ग का अनुसरण करना तथा समस्त प्राणिजगत् व मनुष्य मात्र के लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त करना ही जीवन का उद्देश्य है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की जीवन यात्रा पर अब दृष्टिपात करते हैं तो ज्ञात होता है कि वे बालक मूलशंकर शिव पूजन के तत्कालीन

(शेष पृष्ठ 2 पर)

'आर्य-प्रेरण' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

हे दीपक! तुम्हें प्रणाम

एक मुहावरा भी है घी के दिए जलाना अर्थात् खुशी मनाना। दीपक खुशी का प्रतीक भी है। हमें जीवन में सदैव खुश रहने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में खुशी तभी संभव है जब हम ज्ञान की तरह खुशियां बांटना भी सीखें।

दीपक अंधकार को हरता है अत: दिवसावसान के उपरांत सूर्य के प्रकाश के अभाव में दीप प्रज्वलित करना स्वाभाविक है लेकिन दिन में जब सूर्य की देदीप्यमान किरणों प्रकाश बिखेर रही हों तब पूर्ण उजाले की अवस्था में भी दीप प्रज्वलन का क्या औचित्य है? पूजा पाठ अथवा अन्य मांगलिक अवसरों पर ही नहीं किसी भी कार्य के विधिवत उद्घाटन करने से पूर्व दीप प्रज्वलित करना शुभ माना जाता है। दीपक अंधकार को हरता है। अत: प्रकाश का प्रतीक है जबकि अंधकार अज्ञान का प्रतीक है। वेदों में प्रार्थना की गई है-

असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्माऽमृतं गमय।

हे प्रभु हमें असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से अमरता की ओर ले चल। दीप प्रज्वलित करना इस प्रार्थना की स्वीकारोक्ति है। हम सर्वदा ज्ञान की ओर ही उन्मुख होना चाहते हैं। हम बाह्य प्रकाश होने के बावजूद सत्य, ज्योति और अमरता के प्रतीक के रूप में दीप प्रज्वलित करते हैं। हम न केवल स्वयं लाभांवित होना चाहते हैं अपितु सबको साथ लेकर चलना चाहते है। दीपक स्वयं जलता है लेकिन सबको प्रकाश देता है।

एक दीपक से असंख्य दीपक जलाना संभव है। जब एक दीपक से दूसरा दीपक जलाया जाता है तो उसकी अपनी रोशनी कम नहीं होती। इसी प्रकार ज्ञान का प्रकाश फैलाने से ज्ञान में कमी नहीं आती अपितु ज्ञान में और वृद्धि होती है। वास्तविक ज्ञान वही है जो चारों दिशाओं में अज्ञान रूपी अंधकार को हरने में सहायक हो। दीपक संकुचित भावना के त्याग एवं मन के खुलेपन का प्रतीक है। दीप प्रज्वलित करने में सबके कल्याण की भावना निहित है। कहा गया है कि दान के गर्भ में ही निहित है प्राप्ति का मूल। जो दोगे वह लौटकर आएगा। दूसरों को रोशनी दिखलाओगे तो क्या खुद अंधेरे में रहोगे? कदापि नहीं। सीखना चाहते हो तो सिखाना शुरु कर दो।

दीपक रोशनी करता है लेकिन खुद जलता है। यहां जलने से तात्पर्य है साधना अथवा त्याग व तपस्या से। यदि स्वयं भी प्रकाशित होना चाहते हो और दूसरों को भी प्रकाशित करना चाहते हो तो साधना अनिवार्य है। जब तक मन से नकारात्मक भाव या विकार नहीं जाते हम न स्वयं आत्मज्ञान को प्राप्त होते हैं और न दूसरे ही हमसे

(शेष पृष्ठ 6 पर)

(पृष्ठ 1 का शेष)

स्वरूप पर प्रश्न उत्पन्न करता है, बहिन व चाचा की मृत्यु के दृश्य से वैराग्य उत्पन्न करता है और सच्चे शिव व मृत्यु के रहस्य की खोज हेतु माता-पिता के घर को एक झटके में छोड़ देता है। सत्य की खोज में दर-दर भटकता है। अनेक बार ढोंगी-पाखण्डी गुरुओं के जाल से अपने आत्मबल से निकल जाता है, संस्कृत के ग्रंथों में भी असत्य व अवैज्ञानिक चिन्तन देखकर उनका विरोधी नहीं होता। जैसे कि अवैज्ञानिक चिन्तन देखकर उनका विरोधी नहीं होता है जैसे कि तत्काकालीन बुद्धिजीवी समाज सुधारक हुए। वह महर्षि इसलिए बने क्योंकि उन्होंने वेद ज्ञान का आलोक प्राप्त कर यह घोषणा कर दी कि हजारों साल की अज्ञानता के कारण वेदों का स्थान मानवकृत ग्रंथों ने ले लिया है। इसका अभिप्राय यह नहीं कि संस्कृत भाषा ही अवैज्ञानिक विचारों की प्रचारक हो? उनका मानना था कि वेद परमेश्वर का ज्ञान है जो ग्रंथ वेदमत के पोषक हैं वे ही प्रामाणिक हैं। जो वेदविरुद्ध बातें करते हैं वे अप्रामाणिक हैं। वेदों के भाष्य भी समय-समय पर ऐसे लोगों ने कर दिए थे जो न तो संस्कृतज्ञ थे और न योगी थे। योगी संस्कृत ही समाधिस्थ होकर वेद का साक्षात् कर सकता है। महर्षि की दृष्टि गुरुवर दण्डी स्वामी विरजानन्द जी का सान्निध्य प्राप्त कर स्पष्ट हुई जब गुरुवर दण्डी जी ने आर्य व अनार्य दो भागों में भी संस्कृत ग्रंस्थों का विभाजन करने का मूल मंत्र दिया।

जिन महर्षि जी ने 1867 ईस्वी से वेद प्रचारक कार्य प्रारम्भ करते हुए 'पाखण्ड खण्डिनी पताका' हरिद्वार की भूमि पर स्थापित की थी तो प्रारम्भिक काल में उन्हें धर्म प्रचारक का ही स्थान मिला किन्तु ऐसा धर्म प्रचारक जो तत्कालीन धर्म के स्वरूप का विरोधी प्रतीत होता था। धर्म के ठेकेदारों के पेट पर लात मारने वाली भी माना गया क्योंकि उसकी बातें सुनने पादरी स्काट जैसे ईसाई श्रद्धा से ओत-प्रोत थे। सर सय्यद अहमद खाँ उनकी विचारधारा के समर्थक थे, मैक्सलूलर व मिस्ट बीज जैसे पाश्चात्य बुद्धिजीवी उन्हें लिखकर शंका समाधान करते थे। यह आश्चर्य था कि विदेशी विद्वान् भी उनके प्रशंसक कैसे बन गये।

उस समय जहाँ ऋषि, शास्त्रार्थ- व्याख्यान, लेखन आदि कार्य कर रहे थे वहीं उन्हें मनुष्य के सर्वांगींण विकास व उसकी आजीविका की चिन्ता भी थी। इसका प्रभाव उनके पत्र व्यवहार में शिल्प कला की शिक्षा के लिए मिस्टर बीस को लिखे गये अनेक पत्र हैं जिनका उत्तर देते हुए मिस्टर बीस ने नि:शुल्क शिल्प कला को शिक्षा देने पर सहमति दी।

महर्षि के जीवन में अटल ईश्वर विश्वास व मानवता की रक्षा दो सूत्र हैं जो उनकी 200वीं जयन्ती पर सर्वाधिक प्रचारित होने चाहिए। ईश्वर विश्व ही मानवता का रक्षक बन सकता है- मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।

-म.न. 6-586/1 वेद सदन, मथुरा विहार, नवाबी रोड़, हल्द्वानी, जनपद, नैनीताल पिन-263139 मो. 07906725688

सम्पादकीय

निर्वाण दिवस (दीपावली)

❑ आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, मो. 9810884124

सर्वविदित सत्य है कि स्वामी दयानन्द ने अपनी वैदिक शिक्षा-दीक्षा मथुरा के दण्डी प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती के सान्निध्य में प्राप्ति की। अद्‌भुत प्रतिभा का धनी यह शिष्य गुरुचरणों से जब विदा होने लगा गुरुवर ने उसे अन्तिम उपदेश दिया-

आर्ष ग्रन्थों का उद्धार करो, देश का उपकार करो,
पाखण्ड का खण्डन करो, वेद का प्रचार करो।

गुरुमुख से निःसृत इस आदेश के परिपालन में स्वामी दयानन्द जी ने अपना सारा जीवन लगा दिया। ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि पर्यन्त प्रसृत वैदिक विचारधारा की पुनः प्रतिष्ठा की। उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों की यथार्थता को प्रमाणित करने के लिए, समान्य जनों हेतु उन्हें बुद्धिगम्य बताने के लिए और विवध पाखण्डों, कुरीतियों तथा अन्धविश्वासों के उन्मूलन के लिए सारे जीवन संघर्ष किया। युग प्रवर्तक इस महापुरुष का निर्वाण दिवस ''दीवाली 30 अक्टूबर मंगलवार के दिन थी। तब से ही यह पर्व निर्वाण दिवस के रूप में सारे देश में मानित है। जिस प्रकार उनका जीवन आर्य जाति के लिए प्रेरणा स्त्रोत है उसी प्रकार उनका मृत्यु का क्षण भी उनके परम आस्तिक भाव को प्रकट करता है। जिसे देखकर-पढ़कर पं. गुरुदत्त जैसे अनेक लोगों का जीवन परिवर्तित हो गया। अनास्था की जगह आस्था और नास्तिकता का स्थान अखण्ड आस्तिकता ने ले लिया। पाठकों की भावनाओं को ऋषि जीवन के अन्तिम क्षणों से जोड़ना चाहूँगा जो निश्चित ही प्रेरणा देने वाला है। '' दीपावली के दिन जैसे ही घड़ी ने चार बजाये। स्वामी जी ने अपने शिष्य आत्मानन्द को प्रेम से बुलाया। स्वामी आत्मानन्द आये तो उनसे कहा-'पीछे खड़े हो जाओ या सिरहाने बैठ जाओ।' गुरुदेव का आदेश पाकर वे सिरहाने की ओर, तकिये के पास स्वामी जी की पीठ थामकर विनय से बैठ गए। पुनः पूछा 'आत्मानन्द, क्या चाहते हो?' शिष्य ने दुःखी स्वर में कहा-'महाराज आप अच्छे हो जाएं हमारी ईश्वर से यही कामना है।' दयानन्द ने निरपेक्ष भाव से कहा-''अब शरीर का क्या अच्छा होना। भौतिक शरीर किस प्रकार अमर हो सकता है।'' पुनः आत्मानन्द के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद पूर्ण मुद्रा में कहा,- 'अपने कर्तव्य का पालन करते हुए आनन्द से रहना, घबराना नहीं।' शिष्य के नेत्र अश्रुपात करते रहे। काशी से आये संन्यासी गोपाल गिरी से भी महाराज ने ऐसे ही आशीर्वाद सूचक वाक्य कहे। पुनः दो दुशाले और 200-200 रूपये पं. भीमसेन तथा स्वामी आत्मानन्द को देने के लिए कहा। ये उन दोनों को दिए गए परन्तु उन्होंने लौटा दिए। उपसिति जन समूह को सामने से हटकर पीछे खड़े होने को कहा। कमरे के सभी दरवाजे और छत के रोशन दान खुलवा दिए। वेद मन्त्रों का पाठ करने लगे। संस्कृत भाषा में परमेश्वर की स्तुति की। पुनः हिन्दी भाषा में दीर्घकाल तक परमात्मा का गुणगान किया तथा प्रसन्नचित्त गायत्री मन्त्र तथा 'विश्वानिदेव... का बहुत बार उच्चारण किया, किञ्चित् काल पर्यन्त समाधिस्थ रहे, पुनः आँखें खोली, 'अपने अन्तिम उद्‌गार व्यक्त किए, ''हे दयामय, हे सर्वशक्तिमान् परमेश्वर! तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो। अहा! तूने अच्छी लीला की।'' करवट बदली और श्वास को 'ओ३म्' नाद के साथ बाहर निकाल दिया। पंच भौतिक देह का परित्याग हुआ मानव लीला समाप्त हुई। उस समय सायंकाल के छः बजे थे। आर्य बन्धुओं! किसी भी मानव की मृत्यु का ऐसा रोमांचक वर्णन शायद ही कहीं सुनने-पढ़ने को मिलता हो। आगामी ऋषि निर्वाण दिवस 7 नवम्बर को समस्त ऋषि-अनुयायी उनके ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' के संकल्य को पूर्ण करने का संकल्प लें यही उस महान् आत्मा के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। जो इस दिन मर कर भी मरी हुई आर्य जाति को जाग्रित कर गया।

मानव निर्माण का आधार...
षोडश संस्कार

संस्क्रियते अलंक्रियते
शरीरादिर्येन स संस्कारः।

जिससे शरीर व आत्मा अलंकृत होते हैं, उसे संस्कार कहते हैं।

❑ शरीर और आत्मा सुसंस्कृत से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त हो सकते हैं और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं, इसलिए संस्कारों का करना सब मनुष्यों को अति उचित है।

❑ संस्कार, संस्कृत और संस्कृति ये तीन शब्द वैदिक तथा भारतीय साहित्य में बहुप्रचलित शब्द हैं। इन तीन शब्दों का अर्थ एक ही प्रकार है-क्योंकि ये तीनों शब्द एक ही धातु से घञ प्रत्यय के योग से संस्कार, वक्त प्रत्यय के योग में संस्कृत तथा क्तिन् प्रत्यय के योग में संस्कृति शब्द निष्पन्न होता है। संक्षेप में परिष्कार, परिमार्जन, क्रिया का वैशिष्ट्य, परिशुद्धि तथा आत्मा पर अच्छे प्रभाव डालने वाला तत्व 'संस्कार' कहा जाता है।

❑ उत्पन्न होने से पूर्व के तीन संस्कारों (गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन) का उत्तरदायित्व केवलम माता-पिता पर है।

❑ पश्चात् पांच वर्ष में होने वाले छः संस्कार (जात कर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध) इन संस्कारों को करने के लिए परिवार के लोग दायित्व लें।

❑ शेष सात संस्कार प्रत्येक आश्रम परिवर्तन के समय में होते हैं, इसमें समाज सम्मिलित होता है।

आयुर्वेद के प्रवर्तक 'धन्वन्तरि'

धन्वन्तरि के अनुसार एक सौ प्रकार की मृत्यु है, उनमें एक ही काल मृत्यु है। बाकी अकाल मृत्यु रोकने का प्रयास ही निदान और चिकित्सा है। आयु के न्यूनाधिक्य की माप धन्वन्तरि ने बतायी है। धन्वन्तरि को आयुर्वेद का प्रवर्तक कहा जाता है।

दिवोदास ने कई जगहों पर कहा हैं-मैं जो कुछ कह रहा हूं वह धन्वन्तरि महाराज का ही सिद्धान्त है। धन्वन्तरि ने वेद तथा इन्द्र आदि देवताओं से प्राप्त इस विधि को लोकोपचार के लिए मुझे विरासत में दिया है। परमार्थ के लिए आयुर्वेद से बढ़कर अन्य कोई साधन नहीं है। धन्वन्तरि की ज्ञान ज्योति पश्चित में भूमध्य एशिया तक विस्तृत थी, पूर्व में तो उसे आसानी से फैलना ही था।

धन्वन्तरि के जीवन का सबसे बड़ा विज्ञान, अमृत का प्रयोग था। धन्वन्तरि ने रसायन प्रयोगों की सिद्धि के लिए औषधि और मन्त्र दोनों आवश्यक बताया। धन्वन्तरि के जीवन में 'अमृत कलश' जुड़ा हुआ है। वह भी स्वर्ण कलश जिसमें अमृत भरा था। अमृत निर्माण करने का प्रयोग धन्वन्तरि ने स्वर्ण पात्र में ही बताया था। इस प्रकार स्वर्ण के कलश में अमृत लाने वाले धन्वन्तरि ही थे।

धन्वन्तरि का कथन है-'तुम्हारे देश में उत्पन्न वस्तु ही तुम्हारे लिए उचित और पथ्य है उसे अपने देश में उपजाओं। धन्वन्तरि जयंती पर हम सभी लोग 'आयुर्वेद' के अधिक से अधिक प्रयोग तथा उसके विस्तार का व्रत लें।

निःशुल्क व्यवस्था

आर्यसमाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली की ओर से आर्ष परम्परा गुरुकुल से पढ़े छात्र जो दिल्ली में रहकर बी.ए., एम.ए., बी.एड. करना चाहते है। उनके लिए निःशुल्क निवास, भोजन, छात्रवृत्ति की व्यवस्था है। इच्छुक मेधावी छात्र सम्पर्क करें।

आर्य समाज राजेन्द्र नगर, सम्पर्क-
011-40229761

जहां नहीं होता कभी विश्राम ओ३म् आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद प्रस्तुत करता है

200वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

140वें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बलिदान दिवस पर
भव्य संगीत संध्या

एक शाम ऋषि दयानन्द के नाम

सोमवार, 13 नवम्बर 2023, सायं 4.00 से 7.30 बजे तक

स्थान: आर्य समाज डेरावाल नगर, ब्लाक-ए, दिल्ली (निकट मैट्रो स्टेशन मॉडल टाउन)

गायक कलाकार

श्री विजय आनन्द आर्य (फिरोजपुर) ★ पिंकी आर्या ★ नरेश खन्ना

यज्ञ ब्रह्मा : आचार्य अखिलेश त्रिपाठी जी :-: मुख्य यजमान: लवली-सुरेश आर्य, करुणा-तिलक चांदना (CA)

मुख्य अतिथि : डॉ. हर्ष वर्धन जी (सांसद), श्रीमती बॉसुरी स्वराज (वरिष्ठ अधिवक्ता), श्री विकेश सेठी (चार्वट)

अध्यक्षता: श्री ओम सपरा (प्रधान, उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मंडल (पंजीकृत)

संयोजक: अनिल आर्य, मो. 9810117646

ऋग्वेद यजुर्वेद

कृण्वन्तो विश्मार्यम

आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

प्रभु की असीम कृपा से एवं
स्व. माता वैष्णो देवी जी
स्व. पिता श्री द्वारका नाथ सहगल जी के आशीर्वाद से
महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के पावन उपलक्ष्य पर

28वाँ

सुख शांति समृद्धि सद्भावन 11 कुण्डीय महायज्ञ

दिनांक : 5 नवम्बर 2023 दिन रविवार

स्थान : विवेकानन्द सिधी पार्क, ओल्ड राजेन्द्र नगर

हवन : सायं 4 बजे से 5 बजे तक ब्रह्मा : आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी
प्रवचन : सायं 5 बजे से 6 बजे तक डॉ. महेश विद्यालंकार जी
आचार्य भगवान देव जी वेदालंकार, आचार्य हरेन्द्र शास्त्री जी

आपके व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं राष्ट्रीय सुख समृद्धि व कल्याण के विचारों को केन्द्र में रखते हुए इस स्वर्णिम अवसर का लाभ उठाने तथा दुर्लभ मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने हेतु। आप इष्ट मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

निवेदक :

अशोक सहगल (प्रधान) आर्य समाज, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-60

संयोजक : सुरेश चुघ 9811167514

जो यजमान इस महान् महायज्ञ में भाग लेना चाहते हैं कृपा इन नम्बर पर संपर्क करें । फोन नं. 011.4022470

सामवेद अथर्ववेद

MESSAGE OF GITA

❑ **Dr. Mahesh Vidyalankar**

Cotinue from last issue

We pour ghee into the fire and it flares up. So do the desires when continuously satiated. The fire of desires is such that it never dies. It has ruined many people. Whosoever is gotten in its grip, was made to bid goodbye to this world. The people indulging in fulfilment of desires, enjoyments, luxuries, and vices do not live long. Gita asks the people to save themselves from this destructive fire. Husband and wife, while staying within limits by observing righteousness, restraint and moderation, should satisfy their all sorts of desires which will lead them to happiness, calmness, fulfilment and contentment. This very law of nature provides for social orderliness and balance. The man who violates the norms of orderliness, self-restraint, righteousness, moderation and morality, sees his life and family meeting a disastrous end.

ANGER

When our desires are not fulfilled, things do not happen the way we want or are not favourable to us, likings are not realised, and there are obstacles to the accomplishments of our interests, then anger takes place in our mind. Kama leads to anger which is thus the outcome of 'tamas', (the quality of darkness or ignorance) to be directly linked with kama. There are unfulfilled desires and passions at the root of anger. The mind of everyone is filled with desires and passions. When they are not realised. we become angry. Angry man is irritated easily and is driven to frenzy. It creates tension, worry, depression, restlessness, and despondency in other people and the whole environment. There is no fire like anger. The man in anger burns himself first just like the matchstick, which burns itself first even though it may fail to burn the object at which it is aimed.

The feeling of anger eliminates, temporarily though, such noble things as knowledge, thought, contemplation, moderation and well being. Consequently, the capacity of thought processing weakens, entry of the right kind of ideas is blocked and the tension and pressure in the body are on the rise. The usual appetite and sleep are blunted in the state of anger. The man loses self-control. Even a little anger undoes all that has been achieved. In the fit of anger, man happens to act in a way that leaves him lamenting over his lapse through out his life. Consequently the life becomes a living hell. Anger spells doom and reduces our good deeds to just ashes. Anger multiplies further by ignorance. The disease of anger is growing and spreading fast nowadays. Many a dispute, quarrel and wrong is taking place on this account. Our vanity adds to the anger.

Gita tells us the correct treatment of the disease of anger: 'win anger by suppression of anger (अक्रोध)'. The wise man does not grapple with the anger. He tries to handle that very moment with such things as knowledge, thought and discretion. If a man in anger is like fire and the other acts like water, things come under control.

There are a number of effective ways to avoid fit of anger of the angry person such as, keeping patience, forgetting and forgiving, controlling the situation, maintaining the mental balance, getting out of the sight of the angry man. Keeping silent and not reacting also pacifies the other man`s anger. For getting out of the state of anger, you may do the following: keep silent, drink some water, engage yourself in some task, remove the source of anger from the spot, and so on. Anger is a great enemy. One who conquers it, succeeds in life. One who fails, finds his own life, the family and the social group he belongs to, distressed, troubled, and disturbed. Gita cautions us against anger and advises us to conquer it by calmness. Be wise and root it out completely so as to eliminate its existence. This is the teaching of Gita.

GREED

Gita deals with the topic of greed in detail. Greed is the root cause of all the sins. Greed knows no limit. The desire for more than what we have got goes on increasing. Greed is never satiated. The greedy man is always restive, sad, and disturbed. Greed makes a man rather blind. A greedy person fails to distinguish between his own and the one not his own. Driven by greed the man commits all kinds of wrong. In order to achieve his narrow self-interests he does not hesitate in harming others and acting wrongly. the cravings of a greedy man are never satiated. His sense of discretion and thinking capacity turn selfish gradually. He may have wealth of all the three worlds, even then he is not satisfied. The greed of the greedy man goes on growing with every gain he makes in terms of worldly objects.

दयानन्द स्तवः

नमामि मूलशंकर, दयाकर गुणाऽऽकरम्।
प्रभाऽऽकर सुधाऽऽकर, समस्त-लोक-भास्करम्॥ नमामि

मैं दया के निधि, गुणों की खान, तेजस्विता के पूंज, अमृत के सागर और सारे लोकों के प्रकाशित करने वाले महर्षि दयानन्द (मूलशंकर) को प्रणाम करता हूं।

स्व-ज्ञान-दीप्ति-भास्वरं, गुण-प्रभा-विकस्वरम्।
स्व-योग-रोचिषाऽऽ वृतं, तपो-विधूत-कल्मषम्॥ नमामि.

अपने ज्ञान की कांति से तेजोमय, गुणों की आभा से सुशोभित अपने योग के तेज से सुशोभित और तपस्या के द्वारा क्षीण-पाप महर्षि दयानन्द को प्रणाम करता हूं।

महर्षि-वृन्द-वन्दितं,श्रुतेर्निनाद-नन्दितम्।
अनाथ-नाथमाश्रयं, सदा सदार्य-संश्रयम्॥ नमामि.

ऋषि मुनियों के द्वारा अभिनन्दित, वेदों की ध्वनि से आनन्दित होने वाले, अनाथों के नाथ और आश्रयदाता तथा सदा श्रेष्ठ आर्यधर्म के आधार स्वरूप महर्षि दयानन्द को प्रणाम करता हूं।

भजे गणैक-मनिनं, श्रुति-प्रभैक-ध्यानिनम् ।
अवाब्धि-दोष-पायिनं, सुखौघ शान्ति-दायिनम्॥ नमामि.

गुणों का सदा सम्मान करने वाले, वेद-ज्योति का ही एकमात्र ध्यान करने वाले, संसार-सागर के दोषों को पी जाने वाले, सुख और शांति के देने वाले उस महर्षि का मैं गुणगान करता हूँ।

तमोऽपहं रजोऽपहम्, अजस्त्रमात्म-दोष हम्।
तपः-प्रपूत-मानसम्, अनार्थ-वृंद-शासनम्॥ नमामि.

तमोगुण और रजोगुण को नष्ट करने वाले अपने सभी दोषों को नष्ट करने वाले, तपस्या से पवित्र मन वाले और अनार्यों को नष्ट करने वाले महर्षि दयानन्द को प्रणाम करता हूं।

श्रये गुणोच्चायाऽऽश्रयं मनोज्ञ-भाव-संश्रयम्।
भवाब्धि-दुःख-वारकम्, अशेष-दोष-हारकम॥ नमामि.

गुण-समूह के आधार, उदार-भावों के केन्द्र भवसागर के दुरूखों के निवारक और समस्त दोषों को नष्ट करने वाले महर्षि दयानन्द का मैं आश्रय लेता हूँ।

श्रुति-स्मृति प्रचारकं, सदाऽऽर्य-वर्त्म-धारकम्।
दरिद्र-दीन-तारकं, गुण-प्रभा, प्रसारकम्॥ नमामि.

वेदों और स्मृतियों के प्रचारक, सदा आर्यों के मार्ग का अनुसरण करने वाले, दीन-हीनों के उद्धारक और सद्गुणों की ज्वाला का प्रसार करने वाले महर्षि दयानन्द को मैं प्रणाम करता हूं।

नमामि लोक-लोचनं, रुरत-प्रभा-प्ररोचनम्।
सुधी-प्रवीर-रञ्जकं, समस्त-दोष-भञ्जकम्॥ नमामि.

संसार के पथ-प्रदर्शक, तेज प्रभा से विभूषित, विद्वानों और वीरों को आनन्दित करने वाले तथा समस्त अंधविश्वास आदि दोषों को दूर करने वाले महर्षि दयानन्द को मैं प्रणाम करता हूं।

(पृष्ठ 2 का शेष)

लाभांवित हो सकते हैं। नकारात्मक भावों या विकारों से मुक्ति का एकमात्र उपाय है साधना अथवा मन पर पूर्ण नियंत्रण। दीपक की लौ हमेशा ऊपर की ओर ही होती है। हम भी दीपक की लौ की तरह हमेशा ऊपर की ओर ही देखें। हमारे लक्ष्य सदैव ऊंचे हो।

दीपक का जलना त्याग और समर्पण का भी प्रतीक है। पूर्ण त्याग और समर्पण के द्वारा ही हम अपेक्षित लक्ष्य की प्राप्ति में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। दीपक की लौ आत्मा और परमात्मा का भी प्रतीक है। हम सब प्रकाश स्वरूप ही तो हैं। मनुष्य जीवन रूपी प्रकाश की ये सूक्ष्म ज्योति प्रकाश की वृहद् ज्योति का ही एक रूप है इसका सदैव स्मरण रखना चाहिए। दीपक प्रायः मिट्टी का बना होता है जो नश्वरता का प्रतीक है। मनुष्य देह भी नश्वर है। मिट्टी में मिलने से पूर्व एक दीपक की तरह हम सदैव प्रज्वलित रहें यही मनुष्य जीवन के लिए उचित एवं सार्थक है।

एक मुहावरा भी है घी के लिए दिये जलाना अर्थात् खुशी मनाना। दीपक खुशी का प्रतीक भी है। हमें जीवन में सदैव खुश रहने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में खुशी तभी संभव है जब हम ज्ञान की तरह खुशियां बांटाना भी सीखें। खुशियां बांटने से कम नहीं होंगी अपितु बढ़ेंगी हीं जब भी दीप प्रज्वलित करें अथवा प्रज्वलित दीप दिखलाई पड़े मन में उद्दात भावों की कल्पना करें, स्वास्थ्य-समृद्धि तथा आत्मज्ञान की प्राप्ति की कामना करें। जीवन में मंगल की प्राप्ति होगी ही। दीप प्रज्वलित करते समय निम्नलिखित मन्त्र दोहराएं और वही भाव भी मन में लाएं।

शुभं करोति कल्याणमरोग्यं धनसंपदः।
पापबुद्धिविनाशाय दीपज्योति नमोऽस्तुते।।

अपना सहयोग प्रदान करें।

आर्य समाज राजेन्द्र नगर नई दिल्ली की गतिविधियों को सुचारु रूप से चलाने के लिए अपना सहयोग प्रदान करते रहें। आप अपना सहयोग क्रॉस चैक द्वारा आर्य समाज राजेन्द्र नगर के नाम से कार्यालय: आर्य समाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली के पत्ते पर भिजवाये अथवा सीधा ऑनलाइन भी जमा कर सकते हैं। खाता संख्या-3075000100082363, IFSC-PUNB307500, पंजाब नेशनल बैंक। **-अशोक सहगल (प्रधान)**

आर्य समाज राजेन्द्र नगर दिल्ली में

जन्मदिवस सौल्लास सम्पन्न

आर्य नेता अशोक सहगल जी, धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता सहगल जी के विवाह वर्षगांठ एवं स्व. सुरेन्द्र सहगल जी के जन्म उत्सव एवं श्री अतुल सहगल जी के जन्मदिवस के अवसर पर आर्य समाज राजेन्द्र नगर में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया एवं सभी आर्यजनों ने अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की एवं परिवार की ओर से प्रसाद वितरण किया गया।

आर्य समाज राजेन्द्र नगर के नये सदस्य के रूप में श्री अन्दीप बहल जी, सचिन बहल जी एवं श्रीमती साक्षी बहल जी का हार्दिक अभिनन्दन किया गया।

सुनील आर्य, अतुल जी, अन्दीप, साक्षी प्रगति जी का स्वागत करते हुए वीना बजाज जी

अतुल सहगल व अन्दीप व साक्षी प्रगति जी का स्वागत करते हुए स्वर्ण सहगल सतीश मैहता जी, विकास जी, सुनील आर्य

अन्दीप बहल जी का स्वागत करते संजीव आर्य जी

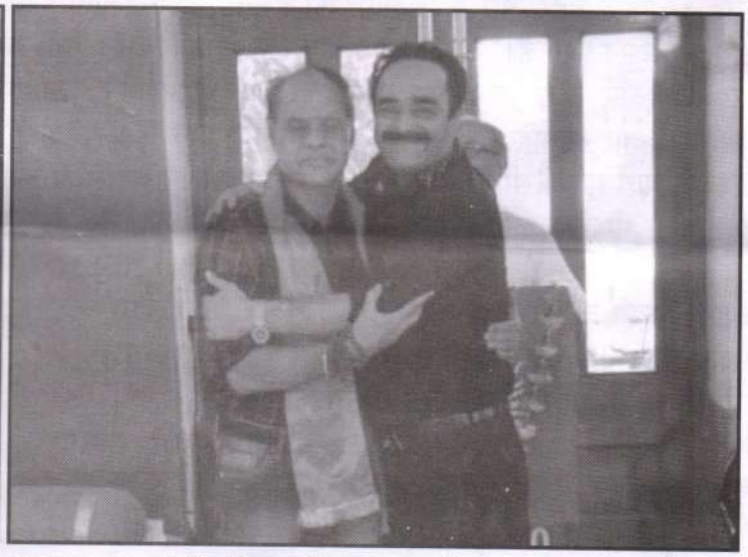

राज बजाज जी श्री अन्दीप बहल जी का स्वागत करते हुए

R.N.I.No. DEL BIL/2007/22120
Date of Publication 20-10-2023

Delhi Postal R.No. DL(C)-14/1431/2021-23
Posted at SRT Nagar PO, New Delhi-55
Posting Date: 7-8 Every Month

आर्य प्रेरणा

नवम्बर-2023

अशोक सहगल (प्रधान)
आर्य समाज राजेन्द्र नगर

महर्षि दयानन्द सरस्वती की २००वीं जयन्ती एवं आर्य समाज स्थापना के १५०वें वर्ष के उपलक्ष्य में समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

दीप और हवा

दीप बनकर मैं जला हर मोड़ पे।
मत परीक्षा ले हवा मुख मोड़ ले।।
टिमटिमाता मैं रहूंगा राह पर।
मुश्किलों से मैं लड़ूँगा रात भर।।
मैं पथिक, मैं अकेला हूं मगर।
रोक तुम सकतीं नहीं मेरी डगर।।
तन जला जग में उजाला है किया।
खुद अंधेरे में उजाला है किया।
खुद अंधेरे में उजाला है दिया।।
धैर्य मत देखे अकेला छोड़ दे।
मत परीक्षा ले हवा मुख मोड़ ले।
खुद जला, जग का सहारा मैं बना।
राह सुनी थी किनारा मैं बना।।
जागरण का गीत गाना है मुझे।
हूं पथिक पथ में चले जाना मुझे।।
तू पवन, मुझमें अगन, जल जाएगी।
हूं अटल सारी बला टल जाएगी।।
साथ मेरा दे तो रिश्ता जोड़ ले।
मत परीक्षा ले हवा मुख मोड़ ले।

- सव्यसाची

किसी पर हँसना और किसी के साथ हँसने में अन्तर है

विनोबा भावे जैसे महान लोगों ने तो परहित में जीवन ही अर्पित कर दिया था। एक बार विनोबा भावे युवकों के एक दल के साथ गांवों में भ्रमण कर रहे थे। एक जगह पर वह अचानक ठहरे और कुछ लोगों को हँसता खिलखिलाता हुआ देखकर कहने लगे, 'यह कुत्सित हँसी है।' और इतना कहकर वह आगे चलने लगे। कुछ देर बाद वह फिर से रुके और कुछ लोगों को हँसता देख बुदबुदाने लगे, 'आहा, कैसी प्यारी हंसी। आहा?' और आनंदित होकर आगे चलने लगे। अब एक युवक से रहा नहीं गया। पूछा कि आचार्य यह कैसी दुविधा में डाल दिया है आपने? हँसी तो आखिर हँसी ही होती है न। पहले भी कुछ लोग हँस रहे थे। अभी भी कुछ लोग हँस ही रहे थे। 'यही तो बात है वत्स,' विनोबा भावे ने हौले से हंसकर कहा। 'पहले वाले लोग किसी पर हँस रहे थे। यानि किसी की मजबूरी आफत या दिक्कत पर हँसकर लहालौट हो रहे थे। मगर ये लोग आपस में हिलमिलकर कुछ चर्चा करते हुए हँस रहे थे। किसी पर हँसना और किसी के साथ हँसना यह दोनों अलग-अलग है।'

-**पावनी पांडे**, सारंगपुरा, जयपुर (राजस्थान)

अनमोल वचन

- शरीर को रोगी और दुर्बल रखने के समान कोई पाप नहीं है।

  - **लोकमान्य तिलक**

- जो पुरुष निरुत्साह, दीन और शोकाकुल रहता है, उसके सब काम बिगड़ जाते हैं और वह बहुत बड़ा विपत्ति में पड़ जाता है।

  - **बाल्मीकि**

Printed and published by Mr. Narinder Mohan Walecha secretary on behalf of Arya Samaj, Rajinder Nagar and printed at Mayank Printers, 2199/63, Naiwala, Karol Bagh, New Delhi-110005 and published at Arya Samaj, Rajinder Nagar, New Delhi-110060.
Editor: Aacharya Gavendra Shastri